2 अक्टूबर 2017, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

20वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 17 से 24 सितम्बर तक जिनागम के 22 विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 20वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ।

दिनांक 17 सितम्बर को शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सूरजमलजी हूमड रामगंजमंडी व श्री प्रकाशचंदजी गंभीरमलजी अहमदाबाद उपस्थित थे। विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

शिविर एवं मंच का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटा, ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन जयपुर, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत व श्री इन्द्रचंदजी कटारिया जयपुर के करकमलों से संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त आ.कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री अरविन्दजी दोशी गोंडल, आ.धरसेन के चित्र अनावरणकर्त्ता पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री सौरभजी जैन मेरठ एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री शांतिलालजी जैन भीलवाड़ा थे।

आगन्तुक विद्वानों व महानुभावों का श्री सुशीलजी गोदीका जयपुर द्वारा तिलक लगाकर एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा माल्यार्पणकर स्वागत किया गया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यहाँ जयपुर, कोटा और बांसवाड़ा विद्यालयों के छात्रों को जैन तत्त्वज्ञान, न्यायशास्त्र व करणानुयोग के गहन विषयों के साथ-साथ आध्यात्मिक विषयों का विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा गंभीर अध्ययन कराया जायेगा।

इस अवसर पर श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री सूरजमलजी हूमड, श्री प्रकाशचंदजी सेमारी आदि महानुभावों ने भी सभा को संबोधित किया।

सभा का संचालन करते हुए ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी ने टोडरमल स्मारक को समाज में विभिन्न प्रकार के शिविरों का प्रवर्तक बतलाते हुए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरों, पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में सोनगढ में आयोजित प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर, प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर, ग्रुप शिविर एवं अन्य विभिन्न प्रकार के शिविरों की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं वर्तमान शिविर को एक युगांतरकारी कदम बतलाया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल पूज्य गुरुदेवश्री के छहढाला पर हुये सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'दृष्टि का विषय' पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'द्रव्य-गुण-पर्याय' विषय पर हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ.दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड आदि अनेक विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

प्रात:काल नित्य-नियम पूजन के साथ-साथ श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान एवं सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र-भक्ति का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा महाविद्यालय के छात्रों द्वारा संपन्न हुये।

शिक्षण कक्षायें – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सामान्य श्रावकाचार, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार व मोक्षमार्गप्रकाशक (व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रमाण का प्रामाण्य व गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रमाण का विषय/फल व क्रमबद्धपर्याय, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज द्वारा परीक्षामुख व हेतु-हेत्वाभास, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सर्वज्ञसिद्धि, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा तीन लोक व नैगमादि सप्त नय, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा सात तत्त्व का अन्यथास्वरूप व चार अभाव/लक्षण-लक्षणाभास, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा मंगलाष्टक/महावीराष्टक व देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा 14 गुणस्थान व पंचभाव, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

प्रात: 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा प्रवचन के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ.भारिल्ल एवं अरहंत चैनल पर गुरुदेवश्री के

(शेष पृष्ठ 11 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

राजेश के वक्तव्य पर श्रोताओं की सामूहिक प्रतिक्रिया देखकर प्रो. ज्ञान ने सबको धन्यवाद देते हुए मि. संजय जैन को आमंत्रित किया और उसका परिचय कराते हुए कहा –'यह वही संजय जैन है, जिन्हें आप लोग संजू नाम से जानते-पहिचानते रहे हैं। इन्होंने अनेक प्रतिकूलताओं के बाद भी जो पुरुषार्थ किया है, वह आप स्वयं इनके ही श्रीमुख से सुनकर देखेंगे – आइये मि. संजय !''

संजू ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा –''लोक में धर्म की भिन्न-भिन्न परिभाषायें और मान्यतायें प्रचलित हैं, जिनमें अधिकांश कपोलकल्पित हैं, जिनसे भोले जीव भ्रमित हो रहे हैं। धर्म के सही स्वरूप से अनभिज्ञ कुछ लोग धर्म के स्वरूप को अपने-अपने तरीके से इस तरह परिभाषित करते आ रहे हैं, पालते आ रहे हैं, जो वास्तविकता से परे हैं।

कोई तो अपनी अत्यन्त पुरानी परम्पराओं से चिपके हैं, ऐसे लोग कुलाचार को ही धर्म माने बैठे हैं, और कोई अत्याधुनिक बनकर सम्पूर्ण परम्पराओं को भूलकर खाओ-पियो और मौज करो, धर्म सब ढोंग है, आडम्बर है – ऐसी धारणा बनाकर धर्म को तिलांजलि दे बैठे हैं। पर वे सभी भूल में हैं। मेरी भी कुछ समय पूर्व तक यही स्थिति थी; पर..... मेरा सद्भाग्य ही समझो कि मुझे किसी तरह सन्मार्ग मिल गया है। एतदर्थ मैं अपने मित्रों को जितना भी धन्यवाद दूँ, उनका कितना भी उपकार क्यों न मानूँ, कम ही होगा।''

बंधुओं ! धर्म की प्राप्ति न तो केवल धर्म की परिभाषाओं को याद कर लेने से ही होती है और न कोरी परम्पराओं के पालने से ही धर्म की प्राप्ति संभव है।

पण्डित सदासुखदासजी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में लिखा है कि ''भगवान अरहंतदेव के मुखारबिन्द से प्रगट हुआ क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि दसधर्म आत्मा का स्वभाव है, पर वस्तु नहीं है। क्रोधादि कर्मजनित उपाधि दूर होने पर आत्मा का वह स्वभाव स्वयमेव प्रगट होता है।

धर्म को कोई छीन नहीं सकता, चुरा नहीं सकता, बिगाड़ नहीं सकता। इसे धन के द्वारा खरीदा नहीं जा सकता। यह तीर्थ, मंदिरों, नदी, पर्वतों में धरा नहीं है, जो वहाँ जाकर लाया जा सके। यह तो आत्मा का निज स्वभाव है। इसकी प्राप्ति तो आत्मस्वभाव के सम्यक्ज्ञान व सत्य श्रद्धान से होती है।

तथा यह इतना सुगम है कि बालक, वृद्ध-युवा, धनवान-निर्धन, बलवान-निर्बल, रोगी-निरोगी, अनाथ-असहाय सभी को स्वाधीनता से सहज ही प्राप्त हो सकता है।

धर्म के धारण करने में कुछ खेद, क्लेश, अपमान, भय, विषाद, कलह आदि किसी प्रकार का कोइ बोझ नहीं लगता, भागदौड़ भी नहीं करनी पड़ती। धर्म अत्यन्त सुगम समस्त क्लेश-दुःख रहित स्वाधीन आत्मा का ही सत्य परिणाम है। तथा अनन्त दर्शन-ज्ञान-चारित्र व सुख इसका फल है।

इस धर्म और धर्म के फल की प्राप्ति हम सबको हो – यही मेरी भावना है। मैं संकल्प करता हूँ कि मेरा तन-मन-धन इसी की सेवा में सदा समर्पित रहेगा।''

अन्त में डॉ. धर्मचन्द जैन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा ''भाई ! घर-द्वार और कुटुम्ब-परिवार के राग की आग में तो सभी जलते-मरते हैं, अपने बाल-बच्चों की चिन्ता कौन नहीं करता ? चिड़िया जैसे साधन-विहीन प्राणी भी अपने बच्चों का घोंसला बनाते हैं और उन्हें पालते-पोसते हैं, उन्हें चुग्गा ला-लाकर चुगाते हैं, अत: अपने कुटुम्ब-परिवार के भरण-पोषण में ही सारा जीवन बिता देना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

बुद्धिमानी की बात तो यह है कि कुटुम्ब-परिवार की जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए हम धर्म और समाज की सेवा में समर्पित रहें।

इस मौके पर सबसे पहले मैं विज्ञान के स्व. दादाजी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनके द्वारा बाल्यकाल में संस्कार पाकर विज्ञान ने अपने मानव जीवन को तो सफल और सार्थक कर ही लिया, युवा-वर्ग के मार्गदर्शक भी बने। कदाचित् उनके द्वारा वे पौराणिक कथायें सुना-सुनाकर विज्ञान को धार्मिक संस्कार न दिये गये होते तो आज हम धर्म के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में जो यह चमत्कार देख रहे हैं, देखने को नहीं मिलता।

मैं इस अवसर पर अपने स्व. पूज्य पिताजी को स्मरण किए बिना भी नहीं रह सकता; क्योंकि उन्होंने न केवल कहकर

बल्कि धार्मिक जीवन जीकर भी मुझे जीवनभर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रेरणा दी एवं सन्मार्ग दिखाया।

यद्यपि कार्य की व्यस्तता के कारण मैं उनके द्वारा संग्रहीत सत्साहित्य एवं धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं का उनके जीवनकाल में अधिक उपयोग नहीं कर पाया, कल पर ही टालता रहा। और जब तक वह कल आने का समय आया, मैं अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हुआ तब तक वे दिवंगत हो गये, महाप्रयाण कर गये। इसका मुझे अफसोस है। पर होनी को कौन टाल सकता है।

वे मुझे अपने जीवनकाल में तो प्रेरणा देते ही रहे, मरणोपरान्त आज भी स्वप्नों में आ-आकर सावधान करते हैं। मैं उनके जीते-जी तो अधिक कुछ नहीं कर पाया, पर उनके अभाव में मैंने अपने जीवन को भी उनकी भावना के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया है और अपने बेटे राजू को भी उनकी भावना के अनुरूप विद्वान बनाने में सफल हो गया हूँ - इसका मुझे विशेष हर्ष है।

वे जहाँ भी होंगे, राजू को एक युवा विद्वान के रूप में देखकर अवश्य प्रसन्न और संतुष्ट होंगे।

मुझे उनके द्वारा मंगाई जा रही आध्यात्मिक मासिक पत्रिका की विज्ञप्ति से ही राजू को उस महाविद्यालय में प्रवेश दिलाने की जानकारी मिली थी, जिस कारण राजू आज इस योग्य बन सका है।

उन्होंने हमें धन-सम्पत्ति तो दी ही, धर्म के संस्कार भी दिये; अत: हम उनका जितना भी उपकार माने कम है। वे सर्वोच्च न्यायालय के सर्वोच्च पद पर पदासीन होकर भी धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत थे। इससे स्पष्ट है कि लौकिक शिक्षा व सर्वोच्च पदों से धर्म का कोई विरोध नहीं है। और न धर्म मात्र अनपढ़ों के दकियानूसी विचारों का नाम ही है। धर्म तो एक वैज्ञानिक व्याख्या है, प्राकृतिक वस्तु व्यवस्था है।

मैं इस अवसर पर प्रोफेसर ज्ञान के पिताश्री को भी धन्यवाद देना चाहूँगा; क्योंकि उन्होंने भी हमें प्रो. ज्ञान जैसा कठोर परिश्रमी, ईमानदार, सज्जन और संस्कारी सपूत दिया है। प्रो. ज्ञान लौकिक शिक्षा के तो गुरु हैं ही, धार्मिक मार्गदर्शन देकर धर्म के क्षेत्र में भी वे गुरु बन गये हैं। और तो ठीक, पर विज्ञान जैसे मित्र को सन्मार्ग पर लाने वाला यदि कोई है तो वह प्रो. ज्ञान ही हैं।

(क्रमश:)

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में 20वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में दिनांक 24 सितम्बर को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई तथा समस्त विद्वत्गण व अध्यापकगण उपस्थित थे। इसमें तीनों महाविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि एक साथ अनेक विषयों का कम से कम समय में व्यवस्थित ज्ञान प्राप्तकर हम सभी को बहुत लाभ मिला है; अत: ऐसे शिविर प्रतिवर्ष अवश्य आयोजित होने चाहिये। अध्यापकों की ओर से डॉ. संजीवजी गोधा एवं डॉ. प्रवीणजी शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किये। पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत हुये शिविर में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित किया। सभी विद्वानों एवं अध्यापकों का आभार श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। अन्त में डॉ. भारिल्ल द्वारा दीक्षान्त भाषण के रूप में सभी छात्रों को मार्मिक उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् सफल विद्यार्थियों को साहित्य एवं प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र इसप्रकार हैं -

उपाध्याय कनिष्ठ/वरिष्ठ में 69 छात्र प्रथम श्रेणी, 46 छात्र द्वितीय श्रेणी एवं 19 छात्र तृतीय श्रेणी; प्रथम वर्ष में 40 छात्र प्रथम श्रेणी, 21 छात्र द्वितीय श्रेणी एवं 4 छात्र तृतीय श्रेणी तथा शास्त्री द्वितीय/तृतीय वर्ष में 48 छात्र प्रथम श्रेणी, 18 छात्र द्वितीय श्रेणी एवं 3 छात्र तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। उपाध्याय कनिष्ठ/वरिष्ठ में संयम जैन दिल्ली ने प्रथम, अंकुर जैन खड़ैरी ने द्वितीय एवं आप्त अनुशीलन जैन दमोह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।शास्त्री प्रथम वर्ष में दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने प्रथम, निखिल जैन फिरोजाबाद ने द्वितीय एवं मयंक जैन बण्डा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्री द्वितीय/तृतीय वर्ष में संयम जैन नागपुर ने प्रथम, प्रतीक जैन विदिशा ने द्वितीय एवं अमन जैन दिल्ली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त तीनों महाविद्यालयों की सभी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण आकाश जैन कोटा एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

धन्यवाद !

उदयपुर (राज.) निवासी **श्री तपिशजी शास्त्री एवं श्रीमती चेतना जैन** की प्रथम वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में संस्था को 2500/- रुपये प्राप्त हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 अक्टूबर 2017	श्रवणबेलगोला	विद्वत् सम्मेलन
16 से 20 अक्टू.2017	देवलाली	दीपावली
14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 28 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
12 से 16 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक

सर्वोदय अहिंसा

सर्व: सर्वत्र नन्दतु

नौ सालों से चले आ रहे इस अभियान में हमसे कई लोग जुड़े और जुड़ते जा रहे हैं, प्रेरणा ले रहे हैं, प्रेरणा दे रहे हैं। आप भी इससे जुड़कर इस पवित्र अभियान का हिस्सा अवश्य बनें, **प्रेरणा लें भी और दें भी।**

आप इस अभियान को जन-जन तक पहुँचायेंगे, हम आपका सहयोग जन-जन तक पहुँचायेंगे।

साभार दैनिक भास्कर नागपुर • 1 नवंबर, 2015

विनोद यादव | मुंबई
मधुर जोशी/आदित्य पूजन

आतिशबाजी की एक सीमा तय होनी चाहिए। लेकिन ये क्या हो? इसी को जानने के लिए हमने देश में पहली बार सर्वाधिक इस्तेमाल किए जाने वाले 10 पटाखों की लैब में जांच कराई। रिपोर्ट आई चौंकाने वाली। इसमें बड़ी मात्रा में पारा और सीसा पाया गया। रिपोर्ट बताती है कि फुलझड़ी, चकरी, रॉकेट, और रस्सी बम जैसे सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाले पटाखे ही बेहद खतरनाक हैं। यह जांच मुंबई की प्रतिष्ठित इटालैब में कराई गई है। खुद लैब के टेक्नीकल मैनेजर और साईंटिस्ट प्रदीप गोरवाड़कर ने कहा कि पटाखों में सीसा-पारा मिलना आश्चर्यजनक और चिंता की बात है। यह टेस्टिंग वायु प्रदूषण रोकने के लिए काम कर रहे गैर सरकारी संगठन आवाज फाउंडेशन के साथ मिलकर कराई गई। एनजीओ प्रमुख सुमेरा अब्दुलअली कहती हैं कि यह देश में पहला मामला है जब किसी ने इतने बड़े पैमाने पर पटाखों की वैज्ञानिक जांच कराई है। और बकायदा लैब में जांच से सीसा और पारा की पुष्टि हुई। फायरवर्क्स मैनुफेक्चरर्स एसोसिएशन (नार्थ इंडिया) के सचिव हरिश मिलवानी ने कहा कि पटाखे में पारा और सीसा होना गंभीर बात है। उनकी जानकारी के अनुसार पटाखे में पारा पाए जाने की यह पहली घटना होगी।

शेष | पेज 2 पर

निर्माताओं ने कहा हानिकारक

मुर्गा, मोर और हनुमान जैसे लोकप्रिय ब्रैंड के लिए पटाखे बनाने वाली शिवकासी की गोपी एजेंसीज के डॉ. जे गणेश रिपोर्ट को सुनकर चौंक गए। सीसा-पारा को हानिकारक बताया। दावा किया कि वे पारा और सीसा का इस्तेमाल अपने पटाखों में नहीं करते।

पटाखों के लेबल पर रसायनों का जिक्र नहीं

भास्कर ने लैब में जिन 10 पटाखों को जांच के लिए दिया था उनके लेबल पर किसी भी रसायनों का कोई जिक्र नहीं था। जबकि ये सभी पटाखे प्रतिष्ठित ब्रैंड के थे। जबकि किसी उत्पाद में क्या मिलाया गया है इसकी जानकारी देना जरूरी होता है।

लैब कहती है पुलिस केस के बाद ही होगी जांच

देश में पटाखों की टेस्टिंग की सरकारी व्यवस्था ऐसी है कि आम लोग करा नहीं सकते। भास्कर ने जब पेट्रोलियम एंड एक्सप्लोसिव्स सेफ्टी ऑर्गेनाइजेशन (पेसो) से बात की तो जवाब मिला कि इसके लिए पुलिस या कोर्ट का आदेश जरूरी है। फरीदाबाद, चंडीगढ़, आगरा, हैदराबाद और नागपुर कार्यालयों के अफसरों ने आम लोगों के लिए पटाखा टेस्टिंग करने से इंकार कर दिया। पेसो के मुख्यालय नागपुर में डिप्टी चीफ कंट्रोलर ऑफ एक्सप्लोसिव्स आर पिपलानी ने बताया कि पुलिस में एफआईआर करें। फिर पुलिस जब्ती की कार्रवाई करेगी, तभी टेस्टिंग संभव होगी।

हार्दिक आमंत्रण | अवश्य पधारिये | राजस्थान की धरती पर

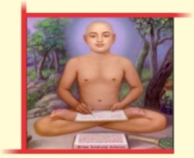

आचार्य कुन्द कुन्द देव

मूलनायक सीमन्धर भगवान

पूज्य गुरूदेव श्री कानजी स्वामी

झालरापाटन की धरती पर 125 वर्षों के बाद आयोजित

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

मंगलवार, 14 नवम्बर 2017 से रविवार, 19 नवम्बर 2017 तक

स्थान : एस.टी.सी. ग्राउण्ड (पिपली बाजार), झालरापाटन (राज.)

* नवीन जिनमंदिर की भव्य प्रतिष्ठा * आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन * देश के उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ * इन्द्र सभा – राज सभा के अनुपम दृश्यों के माध्यम तत्वलाभ * जन्मकल्याणक के प्रसंग पर भव्य पालना झूलन * विश्व प्रसिद्ध पन्नालाल ऐलक सरस्वती भवन के दर्शन * क्षुल्लक धर्मदासजी की पावन भूमि * मात्र 40 किमी दूरी पर अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी के दर्शन * राजा पाड़ाशाह द्वारा निर्मित 1000 वर्ष प्राचीन 151 फुट उत्तंग शिखरयुक्त श्री शांतिनाथ जिनालय के पवित्र दर्शन का लाभ

प्रतिष्ठाचार्य : बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली
निर्देशक : पं. रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर

मंगलसानिध्य – डॉ. पं. हुकुमचन्द जी भारिल्ल, जयपुर, पं. ज्ञानचन्द जी, विदिशा, ब्र. हेमन्त भाई गाँधी, सोनगढ़ पं. राजेन्द्र जी, जबलपुर, ब्र. सुमत प्रकाश जी, खनियाधाना,पं. अभय कुमार जी शास्त्री, देवलाली, पं. वीरेन्द्र जी, आगरा पं. प्रदीप जी झांझरी उज्जैन, पं. शैलेश भाई, अहमदाबाद, पं. राजकुमार जी शास्त्री, उदयपुर, पं. अनिल जी, भिण्ड, डॉ. पं. संजीव जी गोधा, जयपुर,पं. तेज कुमार जी, गंगवाल, पं. ऋषभ जी (इंजीनियर) इंदौर, पं. ऋषभ जी शास्त्री, छिन्दवाड़ा, पं. अजित जी शास्त्री, अलवर, पं. सौरभ – गौरव शास्त्री, इंदौर, पं. कमलचन्द जी, पिड़ावा, पं. धनसिंह जी ज्ञायक, पिड़ावा, पं. ज्ञानचन्द जी, झालावाड़, पं. धर्मेन्द्र जी शास्त्री, कोटा, पं. विराग जी शास्त्री, जबलपुर पं. मनीष जी पिड़ावा आदि।

निवेदक

अध्यक्ष : प्रेमचन्द बजाज, कोटा
महामंत्री : विजय बड़जात्या, इन्दौर
कार्याध्यक्ष : दिलीप सेठी, झालरापाटन
स्वागताध्यक्ष : सुरेन्द्र जी कोटा
मंत्री : शैलेन्द्र चांदवाड़ कोटा
उपाध्यक्ष : अमित अरिहंत मो. 8442074031
कमल सोनी, झालरापाटन
मुकेश कासलीवाल, झालरापाटन
नलिन लुहाड़िया, झालरापाटन

सहनिर्देशक : पं. देवेन्द्र जैन, बिजोलिया
पं. अशोक लुहाड़िया, मंगलायतन
पं. संजय शास्त्री, मंगलायतन

संयोजक : नागेश जैन पिड़ावा, मो. 9414687131
रतन चौधरी, कोटा मो. 7976023452

आवास हेतु सम्पर्क करें
निलेश जैन, इंदौर मो. 8120828282, रितेश जैन , इंदौर मो. 9425066929

विनीत : श्री कुन्दकुन्द – कहान तत्व प्रचारक समिति

झालरापाटन, जिला – झालावाड़ (राज.)

सम्पर्क सूत्र :– 9413003270,9414885960, 8442074031, 9529795295

नोट : झालरापाटन नगर कोटा से 90 किमी, भवानीमण्डी से 40 किमी. की दूरी पर दिल्ली–मुम्बई रेलमार्ग पर है । साथ ही इंदौर एवं भोपाल से झालरापाटन के लिए बस सेवा भी उपलब्ध है ।

दैनिक भास्कर SUNDAY
आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार
नागपुर 1 नवंबर, 2015

डॉक्टर्स ही नहीं खुद जांच करने वाली लैब और पटाखा व्यापारी चौंके, कहा ये खतरनाक

लैब में साबितः पटाखों में सीसा और पारा

दैनिक भास्कर सुरक्षित दीपावली — **देश में पहली बार**
- चार श्रेणियों में पटाखों की वैज्ञानिक जांच
- रिपोर्ट पर देश के जाने-माने डॉक्टर्स की राय

त्योहारों की रौनक पटाखों और रोशनी के बिना संभव ही नहीं है। लेकिन ये हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खतरनाक भी हैं। इनका इस्तेमाल एक सीमा तक ही सही है। इसीलिए हमने वैज्ञानिक तरह से चार स्पेसिफिक श्रेणियों के पटाखों की जांच कराई। रिपोर्ट में पता चला कि इसमें सीसा और पारा जैसे खतरनाक तत्व बड़ी मात्रा में मिले हुए हैं, जो 10-10 साल तक शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रिपोर्ट को हमने डॉक्टर्स से साझा किया ताकि आपको इसके खतरे स्पष्ट पता चल सकें। इसी खतरे को जानने में आपकी मदद करती ये विशेष रिपोर्ट।

हर श्रेणी के पटाखों को खास बनाने के लिए मिलाते हैं अलग तत्व और रसायन

धमाके वालेः प्रेशर के लिए भरते हैं गन पाउडर की गोली

- रस्सी बम में 0.74 फीसदी सल्फर और 0.73 फीसदी कार्बन मिला। दूसरे वाइस टेस्ट में आवाज अधिकतम 117 डेसिबल मिली।

- ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. संगीता वर्ती के अनुसार तेज आवाज के पटाखों से बचें। क्योंकि सामान्यतौर पर व्यक्ति 85 डेसिबल तक की आवाज सुन सकता है। हर तीन डेसिबल के बाद खतरे बढ़ते जाते हैं।

सीमा : ऐसे पटाखे चलाते समय कम से कम 6 मीटर की दूरी बनाए रखें।

संख्या : ऐसे पटाखे एक साथ न छोड़ें। आवाज खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है।

रोशनी वालेः हर रंग के लिए अलग-अलग सॉल्ट

- फुलझड़ी में पारा 14.21 पीपीएम (प्रति 10 लाख ग्राम) मिला। सीसा 16.30 पीपीएम मिला।
- पारा हमारे पाचन तंत्र को कमजोर करता है। सीसा बच्चों के नर्वस सिस्टम और किडनी को नुकसान पहुंचाता है।

- चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. अशोक महाशूर कहते हैं कि 6 साल से कम के बच्चे और फेफड़ों के मरीजों के लिए पारा और सीसा दोनों घातक हैं।

पारा मेडिकल उपकरणों में भी इस्तेमाल नहीं होता।

सीमा : फेफड़ों के मरीज आतिशबाजी से दूर रहें। बच्चे फुलझड़ी आदि ही चलाएं।

संख्या : रोशनी वाले 5 से 10 पटाखे ही काफी हैं क्योंकि ये खतरनाक हैं।

उड़ने वालेः हल्की फ्लूगैस उड़ाती है रॉकेट

- 12 रंगों में फूटने वाले रॉकेट में कार्बन 32.68 फीसदी मिला। इसमें सीसा और पारा पाया गया।
- दिवाली के ही दौरान अलग-अलग प्रदूषक तत्व करीब डेढ़ से आठ गुना तक ज्यादा हो जाते हैं वायुमंडल में।

- हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ.आरआर कासलीवाल के अनुसार रॉकेट के प्रदूषण से कैंसर, अस्थमा, मिर्गी जैसे रोग हो सकते हैं।

कार्बन वाले पटाखों से खांसी का दौरा आ सकता है।

सीमा : हाईब्लडप्रेशर, अस्थमा आदि के मरीज एक भी मिनट ऐसे पटाखों के बीच न रहें।

संख्या : बच्चों को दिखाने के लिए खुद रॉकेट छोड़ें। 5-6 रॉकेट काफी हैं।

घूमने वालेः नली से फ्लूगैस निकलती है तो घूमती है

- चकरी में 100 ग्राम में 0.73 फीसदी सल्फर और 8 फीसदी कार्बन पाया गया। जो खतरनाक है।

- डॉ. एसके गुप्ता बताते हैं कि सल्फर और कार्बन दोनों दिल और फेफड़ों के लिए बेहद खतरनाक हैं। इससे निकलने वाला धुंआ बीमारी की जड़ है। चकरी को बच्चों को दिखाने के चक्कर में घर में तो बिल्कुल न जलाएं।

सीमा : इसे ऐसी जगह ही जलाएं जहां पर खुली हवा हो। ताकि धुंआ निकल सके।

संख्या : बच्चों के ज्यादा जिद करने पर भी कम से कम चलाएं।

सर्वोदय अहिंसा अभियान 9वां वर्ष

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Co-ordinator : Sanjay Shastri, Jaipur, Ph. : +91 9785 999100

सर्वोदय अहिंसा

कृपया इसे पढ़ कर जहाँ सभी पढ़ सकें – ऐसे स्थान पर लगा देवें।

खुशखबरी ! भव्य शुभारम्भ!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

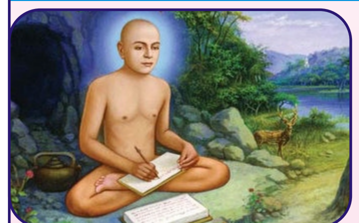

आचार्य समन्तभद्र

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रैल 2018)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक के साथ धार्मिक शिक्षण हेतु **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** का मंगल आरम्भ दिनांक 2 अप्रैल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- 7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।
- 80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं - तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।
- सर्वसुविधायुक्त (लैट-बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट :- प्रवेश फार्म 15 नवम्बर से उपलब्ध होंगे। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

श्री प्रेमचंद बजाज (अध्यक्ष) पण्डित रतन चौधरी (निदेशक) 8104597337

संपर्क सूत्र :- पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203,
पण्डित सौरभ शास्त्री (अधीक्षक) 7891563353, पण्डित अभिनय शास्त्री (सह-अधीक्षक) 7737979912

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

चीनी पटाखों में ज्यादा पोटेशियम

चीनी पटाखों में पोटेशियम क्लोरेट की मात्रा ज्यादा होती है, ये तेजी से जलते हैं और रोशनी भी ज्यादा निकलती है। इसलिए ये आंखों और फेफड़ों के लिए ज्यादा खतरनाक हैं।

बच्चों को 11% अधिक खतरा

एक्सपर्ट्स के अनुसार बच्चों के पटाखों से होने वाली दुर्घटनाओं के शिकार होने की आशंका 11 फीसदी तक ज्यादा होती है। उन्हें बड़ों के पटाखों से हमेशा दूर रखें।

रिसर्च- शादाब समी

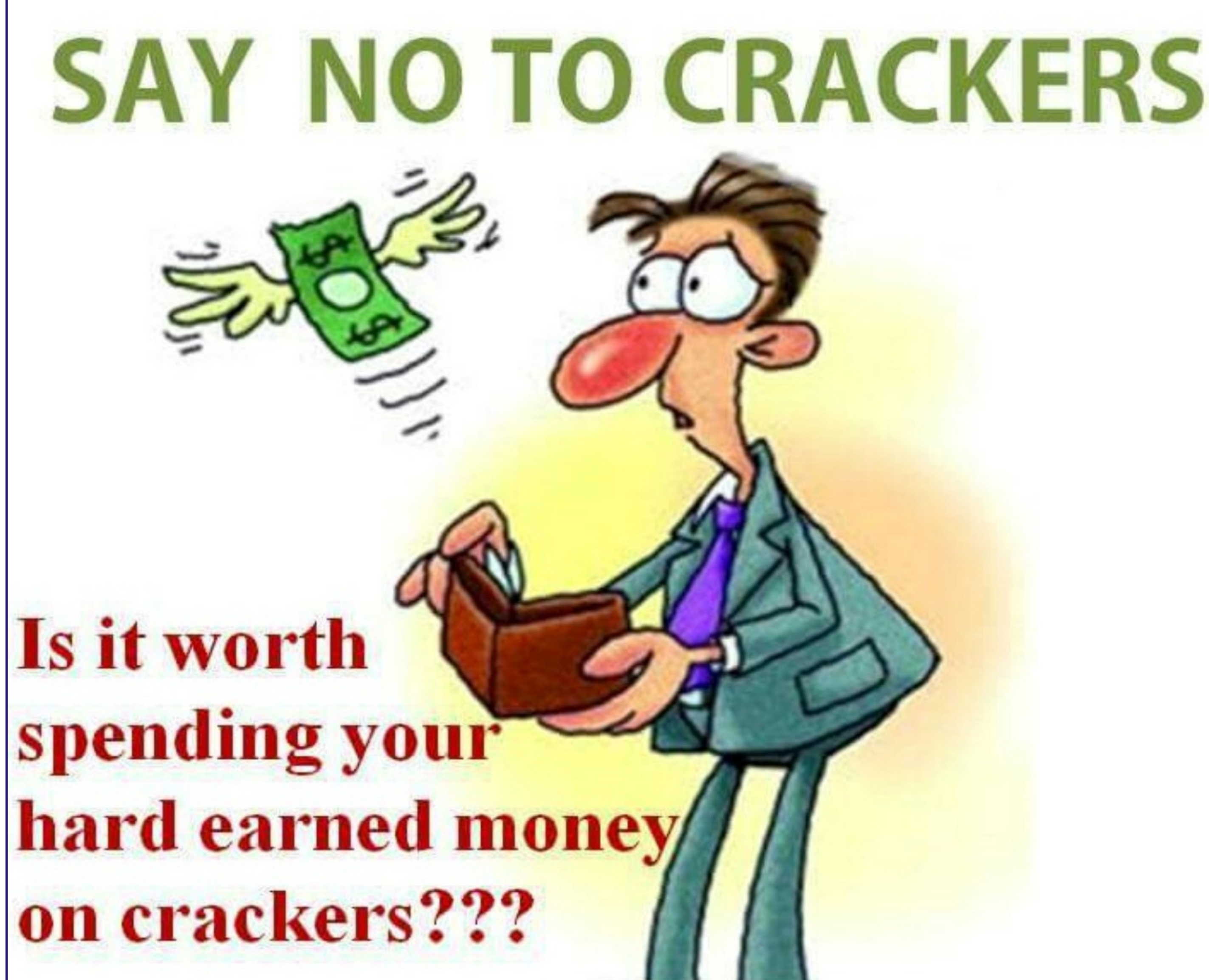

सर्वोदय अहिंसा अभियान 9वां वर्ष

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन | प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Co-ordinator : Sanjay Shastri, Jaipur, Ph. : +91 9785 999100

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (2)

मुक्ति पाने के लिये मोक्षमार्ग की भाषा/शैली समझना आवश्यक

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

गत अंक में हमने पढा कि यदि हमें सम्पूर्ण सुखी होना है तो हमें संसार से मुक्ति पाने का उपक्रम करना होगा। स्वाभाविक बात है कि मोक्ष पाने के लिये हमें मोक्ष का स्वरूप भी समझना होगा और यह हम तब समझ सकते हैं, जब हमें इस मार्ग की भाषा-शैली ज्ञात हो, कथन पद्धति का ज्ञान हो, शब्दों और परिभाषाओं का ज्ञान हो। इस शैली का सांसारिक शैली से अन्तर ज्ञात हो।

किसी भी नये क्षेत्र में हमारी **सफलता की पूर्व शर्त यह है कि हम उसके बारे में अपने समस्त पूर्वाग्रह तो त्याग ही दें, साथ ही उसके सन्दर्भ में मात्र अपने पूर्वज्ञान पर भी निर्भर न रहें।**

बिना किसी अपवाद के यह बात सत्य ही है कि **दूर रहकर किसी के (व्यक्ति, वस्तु, समुदाय, देश, समाज, संस्कृति, घटना, क्षेत्र, काल, विचार एवं विचारधारा आदि) बारे में बनायी गयी हमारी कोई भी धारणा अपूर्ण ही होगी और अपूर्ण होने से अयथार्थ भी होगी; क्योंकि विपरीत ज्ञान भी अज्ञान ही है और अधूरा ज्ञान भी अज्ञान ही है।**

किसी अप्रयोजनभूत विषय के बारे में हमें तथ्यों की सही व पूर्ण जानकारी न हो तो कोई बात नहीं, पर **प्रयोजनभूत विषयों के बारे में सही, सम्पूर्ण और गहन ज्ञान होना अपरिहार्य है; क्योंकि इसके बिना हमारे प्रयोजन की सिद्धि नहीं हो सकती है।**

एक बात और है कि **किसी भी नये विषय का अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व हमें उस विषय की मूल भाषा, शब्दावली और उनके निहितार्थों के बारे में अपनी समझ विकसित करनी चाहिये।** उसकी कथन शैली को समझना चाहिये। यह किये बिना हम उसके मर्म को नहीं समझ पायेंगे।

यदि हम अपनी वर्तमान भाषा, शब्दावली, परिभाषाओं और वार्तालाप की शैली (कथन पद्धति) के दायरे में रहकर ही किसी नयी 'विचारधारा' को समझने का प्रयास करेंगे तो भ्रमित ही होंगे।

एक सामान्य से उदाहरण के माध्यम से हम यह बात बड़ी अच्छी तरह समझ सकते हैं – अच्छे मौसम और खराब मौसम की परिभाषाएं क्षेत्र और काल के अनुसार एवं व्यक्तियों की व्यक्तिगत रुचि और स्वभाव के अनुरूप बदल जाती है। हमारे देश भारत में यदि आकाश में बादल छाये हों और रिमझिम-रिमझिम बरसात हो रही हो तो मौसम अच्छा माना जाता है और लोग मौज-मस्ती तथा सैरसपाटे के मूड में आ जाते हैं; परन्तु पाश्चात्य देशों में ऐसे मौसम को बुरा मौसम कहा और माना जाता है। इसके विपरीत अगर तेज धूप खिल रही हो तो वे उसे बहुत अच्छा मौसम मानते हैं।

प्राचीन काल में और आज भी पिछड़े लोगों के बीच मोटापे को अच्छे स्वास्थ्य की निशानी माना जाता है और दुबले-पतलेपन को कमजोरी की; इसके विपरीत आज के आधुनिक व पढे-लिखे लोगों के बीच मोटापे को एक बीमारी, समस्या और खराब स्वास्थ्य की निशानी माना जाता है और इकहरे बदन को फिटनेस माना जाता है।

ऐसे में हम मात्र अच्छा मौसम या बुरा मौसम अथवा अच्छी हैल्थ-बॉडी शब्द के प्रयोग से अपने विचारों का सही अर्थों में आदान-प्रदान नहीं कर सकते हैं। अच्छा मौसम कहे जाने पर कोई बादलों से घिरे बरसाती मौसम का अनुमान करने लगेगा और कोई कड़ी धूप का, अच्छी हैल्थ-बॉडी कहे जाने पर कोई मोटापे का अनुमान करेगा और कोई इकहरे बदन का।

उपरोक्त स्थिति में जो लोग प्रत्येक परिप्रेक्ष्य में उक्त शब्दों के विभिन्न अर्थों को सही रूप से समझते हैं वे ही सही भावार्थ ग्रहण कर पाते हैं।

ऐसा ही कुछ धर्म के क्षेत्र में आज तक हमारे साथ होता आया है। **हम धर्म के क्षेत्र की सही शब्दावली से परिचित नहीं हैं और धार्मिक व्याख्यानों के अर्थ अपनी लौकिक शब्दावली के अर्थों के अनुरूप समझते हैं इसीलिये सही निष्कर्षों पर नहीं पहुंच पाते हैं। इस परिस्थिति के शिकार होकर हम अपने आपको धर्मात्मा मानते हुये सम्पूर्ण जीवन गुजार देते हैं और धर्म हमें स्पर्श तक नहीं कर पाता है।**

जनसामान्य की सांसारिक भाषा में 'सुख' शब्द का अर्थ होता है 'इन्द्रिय सुख', संयोगजनित सुख-दुःख, किसी वस्तु या व्यक्ति में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि के अनुरूप सुख और दुःख की अनुभूति। इसमें सुख या दुःख, सब कुछ मात्र परपदार्थों पर ही निर्भर है और आत्मा (हम स्वयं) खुशी और गम के छोटे-छोटे, क्षणिक अहसासों के लिये परपदार्थों का मोहताज है। **हमें सांसारिक सुख पाने के लिये कुछ वर्तमान संयोगों को दूर करना है तो कुछ नये संयोग जुटाने हैं। यहाँ हम उन पर निर्भर हैं, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण ही नहीं।**

यह एक अत्यन्त पराधीनता का मार्ग है।

उक्त के विपरीत **धर्म के क्षेत्र में 'सुख' का तात्पर्य है अतीन्द्रिय सुख, अविनाशी सुख, संयोगों से निरपेक्ष सुख, आत्मा का स्वभाव 'अनन्तसुख'। इस सुख को पाने के लिये हमें संयोगों से दृष्टि हटाकर स्वयं पर, अपने भगवान आत्मा पर स्थापित करनी है। संयोग न तो जुटाने हैं और न ही हटाने हैं। यहाँ अपने सुखी होने के प्रयोजन की सिद्धि के लिये हम स्वयं अपने आपमें परिपूर्ण हैं और परपदार्थों का हम पर कोई नियंत्रण नहीं।**

यह एक अनन्त स्वतंत्रता का मार्ग है।

हमारी विडंबना है कि इस बात से सभी सहमत हैं कि हमें सुखी होना है; पर वह सुख कैसा है जो हमें पाना है, इस बात के बारे में प्रत्येक जीव की परिकल्पनाएं और कामनाएं भिन्न-भिन्न हैं; क्योंकि

सबकी 'सुख' की अपनी-अपनी, अलग-अलग परिभाषाएं हैं।

अनादिकाल से हम सबकी एक यही नियति चली आ रही है कि 'सुख' की प्राप्ति के एक ही लक्ष्य पर सहमत होते हुए भी हम उस कथित 'सुख' की खोज में अलग-अलग मार्गों पर चल पड़ते हैं; क्योंकि सुख की हम सबकी परिभाषाएं अलग-अलग हैं। सुख की खोज के एक ही उद्देश्य से सहमत हम सभी लोगों के बीच यह कैसा विरोधाभास है कि कोई इसलिये दु:खी है कि भूख नहीं लगती तो कोई भूख के मारे बेहाल है। कोई कुपोषण का शिकार है तो कोई **over eating** का। किसी के पास वक्त नहीं है तो किसी का वक्त कटता नहीं है। सुखी होने के लिये किसी को किसी का साथ चाहिये तो किसी को एकांत चाहिये। सुख की खोज में कोई पूर्व से पश्चिम की ओर दौड़ रहा है तो कोई पश्चिम से पूर्व की ओर।

मात्र ऐसा भी नहीं है कि विभिन्न लोगों की समस्याएं विभिन्न हैं; बल्कि एक ही व्यक्ति अलग-अलग समय पर परस्पर विपरीत आकांक्षाओं का शिकार बनता है। वही एक व्यक्ति कभी भूख से परेशान है तो कभी भूख न लगने से, कभी वक्त की कमी से परेशान है तो कभी वक्त न कटने से। कभी भीड़ से परेशान है तो कभी तन्हाई से, जब सोना चाहता है तब नींद नहीं आती और जब जागना चाहता है तो आँख खुलती नहीं।

हम संसारी जीवों की क्षेत्र-काल के परिवर्तन के साथ-साथ बदलने वाली सुख-दु:ख की इन तत्कालीन, क्षणस्थायी, परावलम्बी, भ्रमित व अपरिभाषित परिकल्पनाओं के बीच आखिर हम सुखी हो कैसे सकते हैं?

हमारा दुर्भाग्य यह है कि हम जिस मार्ग पर दौड़े जा रहे हैं, वह मार्ग गलत और विपरीत है; क्योंकि 'सुख' की हमारी परिभाषा ही सही और स्पष्ट नहीं है। सुख की खोज में हम दिनरात मारे-मारे फिर रहे हैं; पर हम उस सुख को पहिचानते ही नहीं। हम दु:खों से डरकर भागते फिर रहे हैं पर हम उन दु:खों को जानते ही नहीं।

आखिर कोई 100 पाडों (भैंसा) के झुंड में से एक पाडी (भैंस) कैसे खोज सकता है? क्योंकि वह तो वहाँ है ही नहीं। हमें संसार में सुख कैसे मिल सकता है; क्योंकि संसार में तो सुख का अत्यन्ताभाव है। यदि हम ऐसे ही प्रयासों में जुटे रहे तो हम कब सफल होंगे? ऐसा करते हुए क्या हम स्वयं अपने लिये घोर असफलता की नियति सुनिश्चित नहीं कर रहे हैं?

अनादिकाल से चली आ रही हमारी संयोगों और परपदार्थों में सुख-दु:ख मानने और खोजने की वृत्ति और संस्कार के कारण हमें यह जानने की जिज्ञासा ही उत्पन्न नहीं होती है कि धर्मग्रंथों में जिस 'सुख' की चर्चा है उस सुख की परिभाषा क्या है? कहीं वह परिभाषा हमारी अपनी 'सुख' की परिभाषा से भिन्न तो नहीं है न? हम तो यह मानकर ही बैठे हैं कि यह तो हम जानते ही हैं।

यही एक कारण है निरंतर सुखसाधन में जुटे हुये हम सुख के सच्चे स्वरूप को न जानकर अत्यन्त दु:खी ही बने हुए हैं। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रवचनों का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

सायंकाल बालकक्षा विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलाई गई।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा, श्रीमती मधु गांधी ध.प. श्री वीरेन्द्र गांधी एवं सुपुत्र विवेक गांधी परिवार मंदसौर, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन राजपुर रोड़ दिल्ली, श्रीमती शशि सुरेशचंद जैन शिवपुरी, श्री वीरेन्द्रकुमार कनकमाला हरसौरा कोटा, श्री चम्पालाल भभूतमलजी भण्डारी परिवार बैंगलोर, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री निशिकांतजी औरंगाबाद थे।

शिविर में 16 विद्वानों के माध्यम से लगभग 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। इस अवसर पर हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

जयधवल (कषाय पाहुड) ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण

आचार्य धरसेन द्वारा उपदिष्ट तथा आचार्य भूतबली द्वारा विरचित जयधवल (कषाय पाहुड) को ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करने का कार्य पूर्ण हुआ एवं इसका विमोचन दिनांक 22 सितम्बर को जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा किया गया। डॉ.भारिल्ल ने ताम्रपत्र की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। ज्ञातव्य है कि अब धवला की 13 व महाधवल की 8 पुस्तकों का कार्य प्रगति पर है। **संपर्क सूत्र -** पण्डित मनोज कुमार जैन (चीनीवाले), मोबाइल +91-7599301008

E-mail : ptmanojjain@gmail.com

वैराग्य समाचार

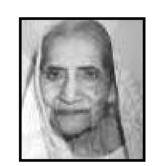

(1) मुम्बई एवं सूरत निवासी श्रीमती बसंतीदेवी छाबड़ा ध.प. स्व.श्री हरखचंदजी छाबड़ा (सीकर) का 95 वर्ष की आयु में दिनांक 8 सितम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक महिला थीं। आपने अनेक वर्षों तक आध्यात्मिक शिविरों में तत्त्वज्ञान का लाभ लिया था। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 10,200/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्री कपूरचंदजी जैन (मुनीम सा.) का दिनांक 15 सितम्बर को इन्दौर में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देह परिवर्तन हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे। आपने गुरुदेवश्री के सान्निध्य में अनेक बार सोनगढ प्रवास किया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील का सम्मान

अपने जीवन को तत्त्वज्ञान के लिये समर्पित करने वाले और वर्षों से अध्यात्मरस गर्भित समयसार ग्रंथ का अध्यापन करने वाले आत्मख्याति के अद्वितीय विशेषज्ञ पण्डित शांतिकुमारजी पाटील का सम्मान आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तिम दिन दिनांक 24 सितम्बर को महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों ने किया।

मंचासीन अतिथियों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि जीवन में उनके शिष्य उनसे भी आगे बढें। पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली ने कहा कि शांतिजी के साथ मिलकर तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में अनेक कार्य किये हैं, यह सम्मान जैनधर्म, जिनवाणी की ही महिमा है।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन में कहा कि ये सम्मान उन गुरुओं को जाता है, जिन्होंने मुझे जिनवाणी का ज्ञान कराया।

इस अवसर पर डॉ.संजीवजी गोधा ने प्रशस्ति वाचन एवं शुभांशु जैन ने काव्यपाठ किया। संचालन आकाश जैन ने किया। **– जिनकुमार शास्त्री**

जैन अध्यात्म सीखें

(बुनियादी सिद्धांतों से विद्वान स्तर तक)

क्या आप जैन अध्यात्म का व्यवस्थित अध्ययन करना चाहते हैं? नौसिखिए से विशेषज्ञ बनें सप्ताह में मात्र 2 घंटे देकर।

मुख्य बिन्दु :– ● 5 वर्षों में 50 से अधिक ग्रंथों का गहराई से अध्ययन। ● पुस्तक खोलकर परीक्षा देने की सुविधा। ● 20 से अधिक छात्रों पर नया बैच शुरु कर सकते हैं या अपनी सुविधानुसार टेलीकॉन्फ्रेंस बैच चुनें। ● 2018 सत्र के प्रवेश प्रारम्भ (प्रथम सत्र की परीक्षा जुलाई 2018 में) ● 2016 और 2017 में भारत और विदेशों में 1000 से अधिक छात्र लाभ ले रहे हैं। ● वार्षिक फीस 1000 रुपये (पुस्तक, क्लास एवं परीक्षा शुल्क सम्मिलित)। ● हर उम्र और वर्ग के आत्मार्थी आमंत्रित हैं। प्रवेश लेने हेतु **संपर्क करें** – जीनल हरिया, +91-9833067741 (सोम. से शनि. सायंकाल 5.30 से 7.00), श्वेता जैन +91-9969412185 (सोम. से शनि. सायंकाल 5.30 से 7.00)

E-mail : parmagamhonours@gmail.com;
Website : www.practicaljainism.com
प्रवेश लेने हेतु यह लिंक दबाएं –
http://tinyurl.com / parmagamhonours2018
(परमागम ऑनर्स कोर्स जयपुर से संचालित शास्त्री पाठ्यक्रम पर आधारित है और श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त है)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान का –

नवम् प्रांतीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 24 सितम्बर को अ. भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान का नवम् प्रांतीय अधिवेशन संपन्न हुआ, जिसका विषय था 'युवा फैडरेशन की गतिविधियों में स्नातकों की प्रासंगिकता'।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विपुल के. मोटानी मुम्बई (राष्ट्रीय अध्यक्ष) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (राष्ट्रीय महामंत्री), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (राष्ट्रीय मंत्री), श्री संजयजी सेठी जयपुर, डॉ. भागचंदजी शास्त्री जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर जिनेन्द्रजी शास्त्री के स्वागत भाषण के उपरान्त परमात्मप्रकाशजी एवं शुद्धात्मप्रकाशजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सभा को संबोधित करते हुए फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने घोषणा की कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ही भांति अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन भी 'आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार' के अपने लक्ष्य के साथ जैनदर्शन के गहन अध्ययन-अध्यापन और प्रचार के कार्य में जुटा हुआ है और शीघ्र ही इस हेतु अनेक नई और प्रभावशाली योजनाएं प्रारम्भ की जायेंगी।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री दिव्यांश जैन, संचालन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ एवं आभार प्रदर्शन डॉ.संजीवजी गोधा जयपुर ने किया।

परमागम ऑनर्स की सफलता

ललितपुर, चौक बाजार व कोहेफिजा बैच की अपार सफलता के बाद दिनांक 30 सितम्बर को अरेरा कॉलोनी में परमागम ऑनर्स भोपाल का चतुर्थ बैच प्रारम्भ हो रहा है। श्री आशीष जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट व श्रीमती नीतू कौशल अरेरा बैच के कॉ-टीमलीडर होंगे। **– शुद्धात्मप्रभा टडैया**

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com